BAOU Education for All | Dr. Babasaheb Ambedkar Open University (Established by Government of Gujarat)
NAAC ACCREDITED A++ GRADE 3.55/4 | 3rd Rank nirf 2024
A Refereed and Peer-Reviewed International e-Journal of Humanities and Social Sciences
Website: http://jyotirmay.baou.edu.in/chaitanya/ Email: chaitanya.ejournal@baou.edu.in
चैतन्य CHAITANYA ISSN: 2582 2802
Year–06, Volume –06, Issue–04, December–2025

रससिद्धान्त का परिचय एवं धातुपरिवर्तन का अवलोकन

– जयकुमार राजेशभाई चुड़ासमा

शोधसार:

भारतीय संस्कृति में धर्म और अध्यात्म के साथ-साथ विज्ञान भी एक अभिन्न अंग है । जिसमे विज्ञान की स्वतंत्र शाखाओं का भी प्रमुखरूप से अध्ययन, प्रयोग और ग्रंथरचना भी हुई है । जिस तरह वर्तमान काल में भौतिकविज्ञान और रसायनविज्ञान शोध के विषय हैं उसी प्रकार प्राचीन समय में रसायन विज्ञान में धातुवाद भी एक महत्त्वपूर्ण अध्ययन का विषय रहा है । जिसमे प्राचीन काल के नागार्जुन, मध्यकाल के गोरक्षनाथ और चाणक्य तक ने इस विषय के माध्यम से आर्थिक पक्ष को सशक्त करने की बात की है ।

इसी विषय को एक नए दृष्टिकोण से प्राचीन एवं आधुनिक विश्लेषण करके प्रायोगिक और सैद्धांतिक पक्ष को विश्व के समक्ष रख सकते है । भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित वैज्ञानिकता को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत कर पुनर्जीवित किया जा सकता है । प्राचीन रस शास्त्रों में वर्णित विधियों द्वारा अधम-धातु को उत्कृष्ट धातु में बदलना हमारे ऋषि-मुनियों, सिद्ध-योगियों, वैद्यों, नाथ सम्प्रदायों के आचार्यो का अमूल्य ज्ञान है |

किल शब्द: रस सिद्ध, द्रव्य, अधमधातु, उत्कृष्ट धातु, पारद, धातुवाद |

प्रस्तावना:

रसायनशास्त्र के 'लोहवाद' और 'देहवाद' इन दो अंगो के पृथक विश्लेषण होते है । आयुर्वेद से सम्बद्ध देहवाद के ग्रंथो पर अधिकांश कार्य हुए हैं किन्तु लोहवादको अस्पृष्ट ही रखा गया है । जिसमे प्रायोगिक विश्लेषण का भी अभाव दीखता है। पारा और गंधक को मूल तत्व के रूप में दर्शाया गया है और इसके माध्यम से ही तांबे एवं पारे को सोने और चांदी में बदला जा सकता है। आधुनिक परमाणुवाद के सिद्धांत और रसायन विज्ञान के प्राचीन सिद्धांत के बीच कुछ समानताएं और कुछ अंतर हैं। धातु रंगाई ऋषि प्रदत्त सिद्धांत द्वारा ही संभव है। उन्होंने देहसिद्धि और लौहसिद्धि अर्थात निम्न धातुओं तांबा, टिन, जस्ता, सीसा को उच्च धातुओं सोना-चांदी में परिवर्तित किया, शिव, भैरव, चंद्रसेन, सिद्धिनागार्जुन, रावण, नित्यनाथ आदि रसाचार्य जिन्होंने विभिन्न रसशास्त्रों

का प्रतिपादन किया प्राय: वे ग्रंथ विलुप्त प्रतीत होते हैं परंतु इनके प्रतीकात्मक एवं विडम्बनापूर्ण रहस्य को समझना होगा, तभी यह प्रक्रिया होती है ।

रस- उपरस परिचय:

भारतवर्ष में आदि काल से ही रसायन की परंपरा का वर्णन प्राप्त होता है | रसेन्द्र पुराण के अनुसार भैरवजी ने जब ब्रह्माजी के पास आयुर्वेद विद्या की याचना की तब ब्रह्मा ने भैरवजी को यह विद्या प्रदान नही की तब भैरवजी क्रुद्ध होकर वापस शिव जी के पास पधारे तो शिव जी ने उनको त्वरित सिद्ध होने वाली रस विद्या प्रदान की अतः शिवजी रसायन के मूल आचार्य हुए | प्रायः २७ रस सिद्धों `का वर्णन रसरत्नाकर, रसरत्नसमुच्चय,पारद संहिता,आनंदकंद, रसेश्वरदर्शन, रसेन्द्रमंगल, रसरत्नप्रदीप, राजतरंगिनी आदि में प्राप्त होता है |

आदिमश्चन्द्रसेनन लकेशन विशारदः । कपाली मतमांडव्यो भास्कर शूरसेनकः ॥

रत्नकोषश्न शंभुच सात्त्विको नरवाहनः । इन्द्रदो गोमुखचैव कम्बलिर्व्याडिरेवच ॥

नागार्जुनः सुरानबो नागबोधिर्यशोधनः। वडः कापालिको ब्रह्मा गोविन्दो लम्पको हरिः।

सप्तविंशतिसंख्या का रससिद्धिप्रदायकाः ॥ (र. र. स.)

अर्थ:

(१) आदिम	(२) चन्द्रसेन	(३) लंकेश (रावण)	(४) विशारद
(५) कपाली	(६) मत्त	(७) माण्डव्य	(८) भास्कर
(९) शूरसेन	(१०) रत्नकोश	(११) शम्भु	(१२)सात्त्विक
(१३) नरवाहन	(१४) इन्द्रद	(१५) गोमुख	(१६) कम्बलि
(१७) व्याडि	(१८)नागार्जुन	(१९) सुरानंद	(२०)नागबोधि
(२१) यशोधन	(२२) खण्ड	(२३) कापालिक	(२४)ब्रह्म
(२५) गोविन्द	(२६) लम्पक	(२७) हरि	

-ये सत्ताईस सिद्धि रससिद्धि देनेवाले हैं। यह सब भी रसायन से सिद्ध हुए है ये सभी अपनी इच्छा अनुसार कालदंड को तोड़ कर त्रेलोक्य में विचरण करते है |केवल पुरुष वर्ग ही नहीं अपितु भारतीय ज्ञान परंपरा में **रस सिद्धा** का वर्णन भी प्राप्त होता है |

१) चांचल्य	२) योगा	३) कंचुकी	४) शैला	५) कापालि	६) कालिका
७) कपालिका	८) मोहिनी	१) वेला	१०) पुष्पदेहा	११) स्वर्णावती	१२) चन्द्रसेना
१३) इन्द्रमा	१४) व्याला	१५) भैरवी	१६) काफचंडी	१७) बालका	१८) रत्नघोषा

१९) कपिला	२०) मोहिनी	२१) नन्दनी	२२) खण्डी	२३) वरपति	२४) आगमा
२५) हरिश्धरी	२६) रत्नकोषा	२७) भाष्करा	२८) रसेश्धरी	२९) चतुरा	३०) नागबाला
३१) लक्षणा	३२) मेनका	३३) सिद्धा	३४) हिंगला	३५) चुल्लका	३६) उत्थापना
३७) अभिषेका	३८) हेमरक्ता	३९) पिंजरी	४०)बीजावर्ता	४१) शीतला	४२) चरका
४३) आरनाला	४४) सूर्या	४५) शुक्ता	४६) सुन्दरा	४७) स्वर्णा	४८)हेमानला
४९) कनका	५०) निष्ठा	५१) श्यामा			

प्रायः रसशास्त्र में जिन द्रव्यों एवं पदार्थो की चर्चा की है उनका नाम एवं वर्तमान में उसका नाम एवं स्वरुप का उल्लेख मिलता है | हालांकि यहाँ पर कुछ ही द्रव्य दर्शित है उनके भी कई प्रकार होते है | इस तरह से इन द्रव्यों को जानने से आगे धातुवाद में सरलता होगी |

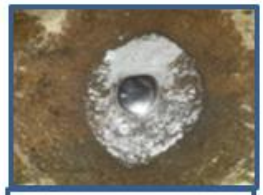
पारद –Hg-Mercury

कनक – Au-Gold

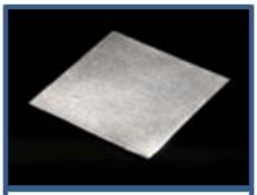
रजत –Ag– Silver

ताम-Cu-Copper

नाग – Pb -Lead

रसक –Zn - Zinc

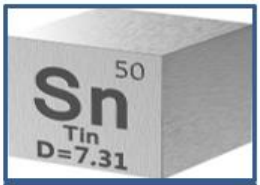

वंग – Sn - Tin

लोहा –Fe-Iron

गंधक – S-Sulphur

हरताल –Arsenic

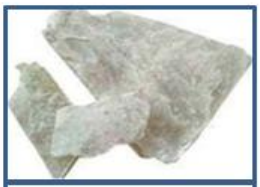
नवसार

हिंगल-HgS

१) गंधक

रसग्रंथों के अनुसार क्षीरसागर में जब समुद्र मंथन हुआ तो गंधक की उत्पत्ति हुई राजा बलि ने इसका सेवन करके बल प्राप्त किया | ग्रंथों के अनुसार माँ पार्वतीका रज ही गंधक के स्वरूप में है "देव्या रजो भवेत् गन्धो" प्राकृतिक रूप से गंधक पर्वत, ज्वालामुखी क्षेत्र आदि में से प्राप्त होता है | गंधक में से एक गंध सदैव आती रहती है अतः इसका गंधक ऐसा नामकरण हुआ | गंधक तीन

प्रकार की होती है १) लालगंधक २) पितगंधक ३) श्वेतगंधक | गंधक कटु, गरम तथा कुष्ठ, खुजली, और दाद को नष्ट करती है | गंधक को शुद्ध करके देहवाद में उपयोग किया जाता है एवं गंधक और पारद के माध्यम से लोहवाद सिद्ध किया जाता है | बिना गंधक के धातुपरिवर्तन लगभग असंभव है |

गंधक दो तरह से हमें प्राप्त होता है:

१) मुक्तावस्था अर्थात गंधक स्वतन्त्र रूप से खदान आदि में प्राप्त होते हैं | ज्यादातर ज्वालामुखी क्षेत्र में प्राप्त होता है | जापान, इरान, यूरोप आदि स्थानों से यह प्राप्त होता है |

२) संयुक्तावस्था अर्थात विविध खनिज में मिश्रित रूप गंधक की प्राप्ति होती है | जैसे की स्वर्णमाक्षिर, रसक, विमल आदि में एवं गंधक वनस्पति और प्राणी में भी प्राप्त होती है | यह गंधक इटली, सिसली, जापान, इरान, यूरोप, अमेरिका, टेक्सास तथा बलूचिस्तान से प्राप्त होती है |

"रसादिद्रव्यपाकानां प्रमाणज्ञापनं पुटम्" अर्थात पारद आदि द्रव्य को पकाने या भस्म करने के लिए जो निश्चित प्रमाण में जो अग्नि दी जाती है उसको पुट कहते हैं | सरावसम्पुट अर्थात दो पात्र के बीच में द्रव्य रख कर उसको कपडमिट्टी करते है तो उस को सरावसम्पुट कहते है | सभी ग्रंथो में से हमें कुल तेरह पुट का वर्णन प्राप्त होता है | इन सभी पुट के माध्यम से हम किस तरह रसायन कर्म में अग्नि दे सकते है उसका सम्यक ज्ञान हो सकता है |

महागजौ भूधरलावकौश्च कुक्कुरभाण्डश्च कपोतकुम्भौ |

वाराहबालुत्पलनादिनुक्त त्रयोदश्चाग्नि पुटं प्रसिद्धाः ||

१) महा पुट २) गज पुट ३) भूधर पुट ४) लावक पुट ५) कुक्कुर पुट ६) भांड पुट ७) कपोत पुट ८) कुम्भ पुट ९) वाराह पुट १०) बालुका पुट ११) उत्पल पुट १२) नादी पुट १३) उक्त पुट

इसी तरह बहुत सारे यन्त्र निर्माण की भी रचना रस शास्त्रों में प्राप्त होती है जिनमे कच्छप, ढेकी, डमरू, हंस, पाताल, खल्व, आदि का समावेश होता है |

सैद्धान्तिक पक्ष:

तत्व के गुणधर्मों को समझने के आधुनिक और प्राचीन सिद्धांतो में जो अत्यधिक अंतर है उससे तत्वों/धातुओ से होनेवाले प्रयोगों के असिद्ध होने की संभावना अधिक हो जाती है । आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पारद [Mercury(Hg) – 80] में से १-परमाणु निकाल देने से सुवर्ण [Gold(Au) – 79] प्राप्त हो सकता है । किन्तु यह प्रयोग आधुनिक पद्धति से संभव होना अत्यंत कठिन है । जब की प्राचीन मतानुसार सुवर्ण को स्वतंत्र तत्व न मानकर एक संयोजित-धातु के रूप में देखा गया ।

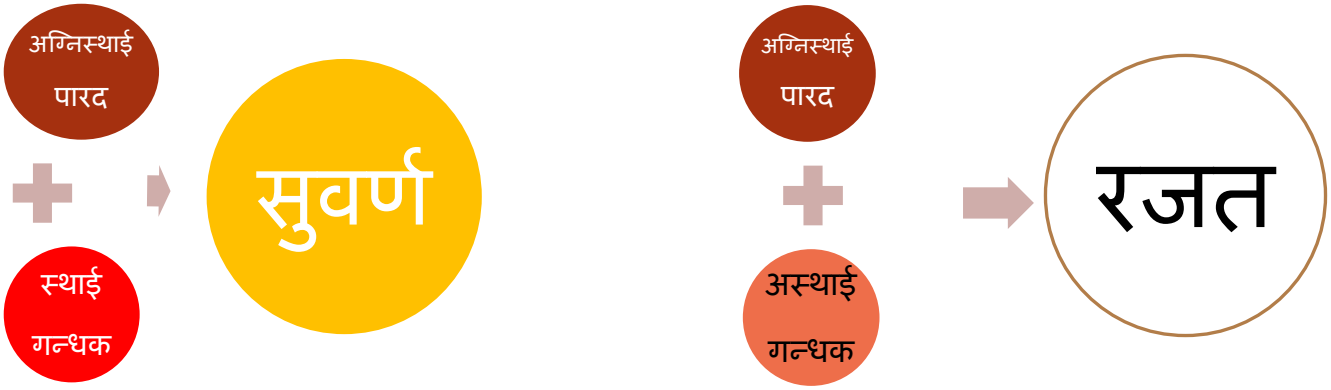

इस प्रकार सुवर्ण और रजत को स्वतंत्र तत्व न मानकर दो तत्वों के संयोजन के रूप में दिया गया है ।

रसरत्नसमुच्चय में इस प्रकार से पारद का अन्य तत्वों के साथ सम्बद्ध दर्शाया गया है । जिसके द्वारा तत्वों के कुछ मूलभूत गुणधर्मो और प्रवृत्तियों के विषय में जानने का प्रयास हो सकता है ।

काष्ठौषध्यो नागे नागो वंगेथ वन्गमपि शुल्बे ।

शुल्बं तारे तारं कनके कनकं च लियते सुते ॥ (र. र. स.)

सन १८६९ में प्रो. ग्रेहाम ने सुवर्ण(Au) पर विद्युत के प्रहार द्वारा उसमे से सल्फर के अलग होने का प्रायोगिक परिणाम पाया जो प्राचीन सिद्धान्त को प्रमाणित करता है । इस प्रयोग में देखा गया की सोने पर जब बिजली का प्रहार किया गया तो यह पाया की सोना काला हो गया और विश्लेषण करने पर पाया गया की इसमें सल्फर की उपस्थिति है और बहुत ही कम मात्रा में पारा भी पृथक हुआ | सल्फर यानी गंधक नाइट्रोजन के साथ सम्बन्ध रखता है | इस प्रयोग से हम कह सकते है की यदि धातु का पृथक्करण हो सकता है तो संयोग भी संभव है इसी जिज्ञासा के चलते हमने प्रायोगिक पक्ष में वेग मिला और सत्यता की तरफ अग्रसर हुए |

रसशास्त्र को यदि दार्शनिक पक्ष से देखे तो पारद को शिव और गंधक को पार्वती स्वरूप माना गया है और उनसे ही संसार की उत्पति या मूल तत्व माना गया है | पुराणो में भी शिवजी के विषय में आया कि उनका विष पान, उनका रेतस आदि कथा आई लेकिन, वह संकेत को स्पष्ट करे तो वहा पे भी रसायनशास्त्र का स्पर्श होता है | अतः वेद से लेकर पुराण और लोकवचन तक रसायन विस्तृत रहा है | प्रायः गोरखनाथ आदि ने लोकवचन में रसायन को लाया और इनके सिद्धान्त की बात की लेकिन एक गूढ शैली में क्योंकि यह विद्या अयोग्य व्यक्ति के पास न पहुंचे | उनका एक पद्य है –

“तोरण गंधक मोरस पारा उन्हें मिलाया नाग मार नागिन को दे सोने से खपर भरी ले”

इसमें सभी वस्तु एक संकेत में दी गयी है जो की एक गुरु ही इस विधि को प्रकाशित कर परिणाम प्राप्त करवाते हैं | इसी तरह एक यंत्र भी प्राप्त होता है जो की रसायन के सिद्धान्त को स्पष्ट

करता है और इनके माध्यम से प्रायोगिक सफलता प्राप्त हो सकती है | यह तालिका गिरनार के समीप एक भोज पत्र में मिला और धुम्रवेध में भी इसका वर्णन मिलता है |

लोहकांत ४	नाग ९	बलि २
वंग ३	सूत ५	रजत ७
कंचन ७	ताम्र १	नवसार ६

यह यन्त्र पन्दरिया यंत्र जैसा दिखता है लेकिन यदि इसका भेद कर के समाधान प्राप्त करके प्रयोग हो तो सफलता मिलेगी यहाँ पर बलि शब्द आया तो इसका अर्थ गंधक होगा तो इस तरह यह संकेत का प्रयोग करते है | अब इसी सिद्धान्त का प्रयोग कर हमने एक प्रमाणिक परिणाम प्राप्त किया है |

अनुभूत प्रायोगिक परिणाम:

वंग का रजत में परिवर्तन:-

रसशास्त्र का अवलोकन कर देखा गया की रजत निर्माण में सबसे अधिक महत्व वंग को दिया गया और उसको रजत में बदलने की बात की वैज्ञानिक द्रष्टि से देखे तो वंग का द्रवनांक 447.47^{0}c और रजत का 961.93^{0}c अतः इस वंग के तामपान को शास्त्रों में “वंग का पानी तोडना” ऐसा वाक्य आया | हमने देखा की वंग की शोधन क्रिया जो शास्त्रों में दर्शित है उनसे वंग में परिवर्तन आता है और हमने जब इसमें अग्निजीत पारद का प्रवेश कराया तो आश्चर्य चकित परिणाम प्राप्त हुआ की जो पारा प्रवेश किया वह रजत बन गया लेकिन अत्यंत लघु मात्रा में रसतंत्र में हमें इसका प्रमाण मिला की इन दोनों का अनुपात 1:6 का है यदि पारद अधिक लिया गया तो यह अमलगम बन जाएगा एवं वंग और पारा अलग अलग दिखेगा | शास्त्रोक्त पद्धति से उचित मार्गदर्शन मिलने पर और रसशास्त्रमें निहित विषयवस्तु के उचित रूपसे अर्थघटन करने पर इच्छित परिणाम भी प्राप्त हो सकते है ।

सारांश:-

रसायनशास्त्र का विषय एक श्रृंखला में चलता है पहले रसशास्त्र के द्रव्यों का परिचय फिर उनके गुणधर्म एवं सिद्धांत का ज्ञान अति आवश्यक है उसके बाद ही प्रयोगात्मक तौर पर इसका विश्लेषण एवं शोध कर सकते है | सभी क्रिया में तीन वस्तुओं का महत्व है और रसशास्त्री एवं ग्रंथो का सार यह है की लोहवाद इन तीन वस्तुओं पर निर्भर है | (1) आग (2) लाख (3) माप, आग अर्थात यन्त्र पुट में हम द्रव्य को कितनी अग्नि दे रहे है लाख अर्थात कार्बन और कोनसा द्रव्य बना रहे है और अंतिम है माप अर्थात मात्रा यदि हम अधिक मात्रा से वेध करते है या कम तो भी परिणाम प्राप्त नहीं होता |

यदि हमारे इस सिद्धांत पर कार्य किया गया तो हमारा भारतीय विज्ञान एक ठोस नीव रख सकता है आधुनिक समय में इन प्रयोगों से हम आधुनिक विज्ञान में जो की पश्चिम की देन है उसे चुनौती दे सकते है और हमारे इस ज्ञान विज्ञान को पुनः विश्व के समक्ष प्रस्तुत कर सकते है |

सन्दर्भसूची:

- वर्मा, अत्तरसिंह. *धुम्रवेध-१*. नवभारत साहित्य मंदिर.
- वर्मा, अत्तरसिंह. *धुम्रवेध-२*. नवभारत साहित्य मंदिर.
- *रसेन्द्र पुराण*. खेमराज प्रकाशन.
- *रसेन्द्रमंगल*. चौखम्बा प्रकाशन.
- *रसरत्नसमुच्चय*. चौखम्बा प्रकाशन.
- *रस तन्त्रं*. चौखम्बा प्रकाशन.
- *रुद्रयामल*. चौखम्बा प्रकाशन.
- *स्वर्णतन्त्रं*. चौखम्बा प्रकाशन.
- *पारद संहिता*. खेमराज प्रकाशन.

जयकुमार राजेशभाई चुडासमा, सहायक प्राध्यापक - हिंदू अध्ययन, स्कूल ओफ ह्युमेनिटिझ एण्ड सोशियल सायन्सिझ, डो. बाबासाहेब आम्बेडकर ओपन यूनिवर्सीटी, अमदावाद.

Email: satya81jeet@gmail.com